

ISSN : 2249-846X

संधान



डॉ० भगवानदास गुप्त स्मृति शोध संस्थान
झाँसी(उत्तर प्रदेश)

वर्ष - 18 अंक-13

2016 ई.

अनुक्रम

पृष्ठ सं०

सम्पादकीय

1. विषय प्रवर्तन — विदेशी यात्रियों के वृत्तान्त : भारतीय इतिहास-लेखन के स्रोत के रूप में डॉ. संजय कुमार 1-16
2. रूसी यात्री लिविदेव के यात्रा वृत्तान्त में भारतीय भाषा एवं संस्कृति विषयक विवरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ. बी. के. श्रीवास्तव 17-24
3. इब्ने बतूता का यात्रा वृत्तान्त : मरह से ग्वालियर, एक ऐतिहासिक अध्ययन डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ 25-34
4. विदेशी यात्रियों की दृष्टि में मराठाकालीन छत्तीसगढ़ : एक अध्ययन डॉ. पंकज सिंह 35-39
5. साम्राज्य वादी इतिहास लेखन के रूप में रिचर्ड फ्रांसिस बर्टन के भारत संबंधी यात्रा वृत्तान्त डॉ. विक्रम सिंह अमरावत 40-46
6. ठगी प्रथा— कर्नल स्लीमेन के संस्मरण : एक अध्ययन डॉ. रंजना जैन 47-51
7. विदेशी यात्रियों की दृष्टि में मुगलकालीन भारत का प्राणी जगत डॉ. रश्मि सिंह 52-62
8. अलबरूनी के प्रवास वृत्तांत में गुजरात डॉ. प्रफुल्ला रावल 63-69
9. मुगल शासकों की वेशभूषा एवं आभूषण समकालीन विदेशी यात्रियों की कलम से रानी मोरे 70-79
10. दतिया की कहानी कैप्टन स्लीमेन की जुवानी डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी 80-82
11. हॉकिन्स और फिंच के यात्रा वृत्तांत में बुरहानपुर डॉ. रुबीना परवीन 83-86
12. मेगास्थिनीज के काल में भारत की सामाजिक संरचना हरिविष्णु अवस्थी 87-90
13. अलबरूनी का भारत यात्रा वृत्तान्त और इतिहास लेखन विशेषकर बुन्देलखण्ड यात्रा वर्णन नफासत उल्ला खॉं 91-96

रूसी यात्री लिविदेव के यात्रा वृत्तान्त में भारतीय भाषा एवं संस्कृत विषयक विवरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

— डॉ० बी० के० श्रीवास्तव

रूस से भारत आने वाले विदेशी यात्रियों की बात करें, तो प्रायः एक ही नाम सामने आता है, और वह है 'अफनासी निकितिन' जो कि एक घोड़ों का व्यापारी था। निकितिन बहमनी शासक मुहम्मदशाह तृतीय (1463-1482) के काल में 1467 से 1472 के मध्य दक्षिण भारत की यात्रा पर आया था। उसके यात्रा वृत्तान्त 'खेजोनिये जा-त्रि-मौर्या' (तीन समुद्र पार की यात्रा) का अंग्रेजी अनुवाद जब लन्दन से 1857 में हाक्लुयट सोसायटी द्वारा 'इण्डिया इन द फिफ्थ सेन्चुरी इन वायेज टू इंडिया' करवाया तब भारतीयों को निकितिन एवं उसके यात्रा वृत्तान्त की जानकारी मिली।¹ उसके यात्रा वृत्तान्त में तत्कालीन भारतीय संस्कृति की झलक मिलती हैं उसके यात्रा वृत्तान्त को आधार बनाकर भारत एवं रूस ने संयुक्त रूप से 'परदेशी' फिल्म का निर्माण किया। उसकी मृत्युपरांत कालिनिन में उसका स्टेच्यू खड़ा किया गया, जिसे भारत-रूस मैत्री के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। भारत-रूस मैत्री के उस आधार को एक पुख्ता स्वरूप 18वीं सदी के अंत में भारत आने वाले एक अन्य प्रमुख विदेशी यात्री लिविदेव ने प्रदान किया।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारत आने वाले विदेशी यात्रियों की बात करें तो लिविदेव ही एक मात्र ऐसा विदेशी यात्री था, जिसने भारत को अपना माना, उसकी भाषा एवं संस्कृति के प्रति आत्मीयता का भाव रखा। अपने यात्रा विवरण में भारतीय भाषा एवं संस्कृति का निष्पक्ष विवरण प्रस्तुत किया। उसके विवरणों से रूस में भारतीय विद्या के प्रति लगाव उत्पन्न हुआ। भारतीय संस्कृति के प्रति उसके द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक साक्ष्यों ने रूस के विद्वानों को प्रभावित किया। भारत विषयक ज्ञान एवं भारतीय विद्या को बढ़ावा देने के कारण लिविदेव को 'रूस में भारतीय विद्या का जनक' (Father of Russian Indology and The first Russian Indologist) कहा गया।²

अब प्रश्न उठता है कि यदि लिविदेव भारत आने वाला इतना महत्वपूर्ण विदेशी यात्री था तो हम इसके बारे में ज्यादा जानते क्यों नहीं? इतिहास की अधिकांश पुस्तकों में इसका नाम नदारद क्यों है? भारत आने वाले विदेशी यात्रियों की सूची में लिविदेव का नाम क्यों नहीं मिलता? इसका उत्तर पाने के लिये हमें निम्न चार बिन्दुओं को जानना होगा—